Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

# भवभूति का यथार्थ – आदर्श चिन्तन

डॉ. राजू राठौर
अतिथि विद्वान
शा.महर्षि अरविन्द महाविद्यालय
गोहद, जिला भिण्ड (म.प्र.)

भारतीय चिन्तन की गरिमामयी श्रृंखला में लोक जीवन के अप्रतिम पारखी, मनोवैज्ञानिक कवि ने मानवीय भावों की अटल गहराई में प्रवेश कर अपनी अप्रतिम रचनाएँ– महावीरचरित, मालतीमाधव,–उत्तर रामचरित में यथार्थ ओर आदर्श चिन्तन का विवेचन किया।

यथार्थ वह दर्पण है जिसमें मानव की सहजता एवं नैसर्गिकता प्रतिबिम्बत होती है तो आदर्श वह अनुकरणीय रत्न है जिसकी आत्मा से भासित जन अपनी महानीयता की चरम सीमा को छू सकता हैं। महाकवि भवभूति की प्रथम रचना महावीरचरित है जिसमें राम का पूर्व चरित वर्णित है। परशुराम और राम के प्रसंग में एक और परशुराम के पराक्रम का यथार्थ त्रिण है तो दूसरी ओर क्षत्रियवंश को 21 वार निर्मूल करने वाले महावली परशुराम का पौरूषेय भी राम की विनय एवं मधुरता के आगे फीका पड़ जाता है।

त्रातुं लोकानिव परिणतः कायावानस्त्रदेवः
क्षात्रे धर्मः श्रित इव तनुं ब्रह्मकोशस्य गुप्त्यै।
सामार्थ्यानामिव समुदयः सञ्चयो वा गुणानां
प्रादुर्भूय स्थितइव जगत्पुण्य निर्माण राशिः।।[1]

पदवाक्य प्रमाणज्ञ कवि की द्वितीय रचना श्रृंगार रसयुक्त प्रकरण मालतीमाधव है जिसमें मालती एवं माधव की प्रणयकथा वर्णित है जिसमें श्रृंगार, प्रणय की मर्यादा एवं सामाजिक आदर्श से कतराकर कभी नहीं चला। मालती–माधव के प्रगाढ़ प्रेम में आसक्त होते हुए भी प्रेम और उद्दीपन के बीच संयमित रहकर भी यथार्थ व आदर्श को न भूले वाली नारी है। मकरन्द एवं कामन्द की मालतीमाधव इत्यादि सभी पात्र आदर्श एवं यथार्थ से आवेष्ठित है जैसे भवभूति पात्री कामन्दकी ने प्रेम का यथार्थ उत्कर्ष दाम्पत्य से ही माना है उसकी अभिव्यक्ति इस प्रकार की है–

''प्रयो मित्रं बन्धता वा समग्रा सर्वे कामाः शैर्वाधर्जिवितं वा।
स्त्रीणां भर्ता धमदाराश्च पुसांनित्यन्योन्यं वत्सयोजतिमस्तु।।[2]

भवभूति की सर्वोत्कृष्ट रचना उत्तररामचरित है जिसमें यथार्थ एवं आदर्श का परिणित स्वरूप दिखाई देता है। इस नाटक के प्रथम अंक में सीता निर्वासन की भूमिका में चित्र दर्शन की योजना के अन्तर्गत राम लोकआराधन के लिए, निर्वासन से अनिभिज्ञ सीता का परित्याग करना चाहते है कवि ने कितना सहज व यथार्थ चित्रण किया है जो निम्न श्लोक में अभिव्यञ्जित है–

स्नेहं या च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति में व्यथा।[3]

द्वितीय अंक में यथार्थ– धरातल पर पश ुपक्षी, पर्वत, इत्यादि से युक्त प्रकृति के भीषण रूप का एवं पुण्यसलिला नदी का स्वाभाविक वर्णन किया है।

एते ते कुहरेषु गद्गदनद गोदावरीवारयो,
मेघालम्बितमौलिनीलशिखराः क्षोणीभृतो दाक्षिणाः।
अन्योन्यप्रतिजातसंकुलचलत्कलोलकोलहलै –
रूत्तालस्तु इमें गंभीरपयसः पुण्याः सरित्संगमा।।[4]

तृतीय अंक में करूण रस के यशस्वी गायक कवि ने यथार्थ से आप्लावित सरस एवं हृदयग्राही करूण रस का चित्रण किया है–

एकोरसः करूण एव निमित्तभेदा–भ्दिनः पृथक्पृथगिवाश्रायते विवर्तान।
आवर्तबुदबुदतरंगमयान्विकारा–नम्भो यथां, सलिलमेव हि तत्समस्तम्।।[5]

सटीक चित्रण करने वाले महाकवि भवदूति ने राम और सीता को मानवीय धरातल पर अलौकिक विधा से न केवल मानवीय संवेग प्रदान किये है। वरन् कपणा की प्रतिमूर्ति सीता एवं विरह वेदना व्यथित राम का अलौकिक चित्रण किया है– ''अपि ग्रावा रोदति दलति वज्रस्य हदय[6]

सम्पूर्ण उत्तर रामचरित का मनन करने से प्रतीत होता है कि चिन्तन एवं गहन अनुभूति से युक्त महाकवि ने यथार्थ एवं आदर्श चिन्तन का रूप हमें दिखाया है वह काव्य साहित्य के इतिहास में अद्वितीय एवं प्रेरणा का स्त्रोत है भवभूति के राम आदर्श कला का प्राण तत्व हैं।

सन्दर्भ सूची –

1. महावीरचरित 2/41
2. मालतीमाधव 6/18
3. उत्तर रामचरित 2/30
4. उत्तर रामचरित 2/30
5. उत्तर रामचरित 3/47